आदिकालीन इतिहास

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
तीन

हिंसा से भरा हुआ संसार

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-सूची

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

तैयारी 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:25) 5

II. साहित्यिक संरचना (2:13) 5

A. आरम्भिक हिंसा और आशा (3:12) 5

1. कथात्मक कहानियाँ (3:59) 5

2. वंशावलियाँ (7:35) 6

B. उत्तरोत्तर हिंसा और आशा (11:06) 7

1. परमेश्वर के पुत्र (12:05) 8

2. नपीली लोग (15:31) 8

3. तत्पश्चात् (18:04) 9

III. मूल अर्थ (19:20) 9

A. सम्पर्क (19:59) 9

1. आरम्भिक हिंसा और आशा (20:55) 10

2. उत्तरोत्तर हिंसा और आशा (42:08) 14

B. उपयोग (44:42) 14

IV. आधुनिक उपयोग (46:35) 15

A. उदघाटन (47:34) 15

1. हिंसा (48:02) 15

2. छुटकारा (50:25) 15

B. निरन्तरता (53:03) 16

1. हिंसा की निरन्तरता (53:54) 16

2. विश्वास की निरन्तरता (55:06) 16

C. पराकाष्ठा (56:26) 17

1. हिंसा का अन्त (56:52) 17

2. अन्तिम छुटकारा (57:45) 17

V. सारांश (59:25) 17

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 18

उपयोग के प्रश्न 22

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अन्तराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अन्तराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें —** पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - **उपयोग के प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें —** उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें उत्पत्ति 4:1–6:8

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:25)

II. साहित्यिक संरचना (2:13)

उत्पत्ति का यह भाग बड़ी सावधानी से एक एकीकृत उद्देश्य के लिए गढ़ी गई साहित्यिक संरचना है।

A. आरम्भिक हिंसा और आशा (3:12)

उत्पत्ति 4-5 चार खण्डों में विभाजित होते हैं, और ये खण्ड कथात्मक कहानियों और वंशावलियों की दो सामान्तर सूचियों को निर्मित करते हैं।

1. कथात्मक कहानियाँ (3:59)

उत्पत्ति 4:1-16 पाँच नाटकीय चरणों में पापी कैन के बारे में बताता है।

- कैन अकेला है, उसे दूर कर दिया गया है।

- बलिदानों में अंतर

- कैन अपने भाई हाबिल की हत्या कर देता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- श्राप

- सुरक्षा

दूसरी कहानी पापी कैन से ध्यान को हटाकर आदम के तीसरे पुत्र शेत की ओर ध्यान देती है। धर्मी शेत का अभिलेख तीन छोटे चरणों में विभाजित है :

- शेत का जन्म

- एनोश का जन्म

- लोगों ने परमेश्वर के नाम को पुकारना आरंभ किया

2. वंशावलियाँ (7:35)

- पहली वंशावली : कैन की पापपूर्ण वंशावली (उत्प. 4:17-24).

- दूसरी वंशावली : शेत की धर्मी वंशावली (उत्प. 5:1-32).

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कैन की वंशावली और शेत की वंशावली में हनोक और लेमेक के नाम पाए जाते हैं, और मूसा ने स्पष्ट रूप से इन दोनों पुरुषों की तुलना एक दूसरे से की है।

हनोक:

- पापी हनोक ने स्वयं को ऊँचा किया

- धर्मी हनोक परमेश्वर के साथ चलता था

लेमेक :

- पापी लेमेक एक हत्यारा था

- धर्मी लेमेक ने परमेश्वर के छूटकर में आशा रखी

B. उत्तरोत्तर हिंसा और आशा (11:06)

इन आयतों के दो मुख्य चरण खतरे से भरी हुई घटनाओं की श्रृंखला का विवरण देते हैं और यह प्रकट करते हैं कि कैसे परमेश्वर ने इन घटनाओं के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. परमेश्वर के पुत्र (12:05)

तीन तर्कसंगत पहचानों का सुझाव दिया गया है :

- शेत के वंशज
- स्वर्गदूत
- राजा या कुलीन व्यक्ति

पूर्व के उदाहरणों में कैन और उसके वंशजों के द्वारा की गई हिंसा के कारनामें जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी पहुँच गए थे – अर्थात् स्त्रियों के प्रति हिंसा में।

2. नपीली लोग (15:31)

- शायद "दानव" नहीं
- संभावित रूप से "शक्तिशाली योद्धा या शूरवीर"

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नपीलवंशियों के प्रकट होने के द्वारा पाप ने पूरी तरह से मानवजाति पर अधिकार कर लिया।

3. तत्पश्चात् (18:04)

हिंसक, पापपूर्ण मानव का बाढ़ के द्वारा विनाश के परिणामस्वरूप वास्तव में भविष्य की पीढ़ियों का छुटकारा होगा।

परमेश्वर शेत के एक विशेष पुत्र , जिसका नाम नूह था, के द्वारा छुटकारे को लेकर आएगा।

III. मूल अर्थ (19:20)

A. सम्पर्क (19:59)

आरंभिक मानवीय इतिहास की हिंसा उस हिंसा के समानांतर थी जिसे इस्राएलियों ने सहन किया था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. आरम्भिक हिंसा और आशा (20:55)

मूसा चाहता था कि उसके पाठक :

- कैन और उसके परिवार को मिस्र के साथ जोड़ें
- धर्मी हाबिल, शेत और शेत वंशियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में इस्राएल के साथ जोड़ें

a. पाप से भरा हुआ कैन, उत्पत्ति 4:1-16

मूसा ने पाँच ऐसे विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया है जिन्होंने इस्राएलियों को अनुमति दी कि वे इस अनुच्छेद को उनके दिनों के साथ जोड़ सकें :

- व्यवसाय
- बलिदान
  - परमेश्वर ने कैन के बलिदान को अस्वीकार कर दिया परन्तु वह हाबिल के बलिदान से प्रसन्न हुआ।
  - मूसा जब सबसे पहले फिरौन के पास इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए गया था क्योंकि वे यहोवा को बलिदान चढ़ाना चाहते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- हत्या

- स्थान

- सुरक्षा

b. धर्मी शेत, उत्पत्ति 4:25-26

शेत द्वारा ईश्वरीय नाम यहोवा के उपयोग ने, उसे इस्राएल के साथ जोड़ दिया।

- "यहोवा" नाम शेत के समय में प्रयुक्त हुआ था।

- मूसा के समय के दौरान यह नाम परमेश्वर के लिए उपयोग होने वाला मुख्य नाम बन गया।

इस्राएलियों ने स्वयं को प्रार्थना के विषय के द्वारा शेत के साथ जोड़ा होगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मूसा चाहता था कि उसके पाठक ध्यान दें कि मिस्री कैन की तरह थे और इस्राएली हाबिल और शेत के समान थे।

c. कैन की पाप से भरी वंशावली, उत्पत्ति 4:17-24

मूसा ने इन वंशावलियों को भी आकार दिया ताकि इस्राएली निरन्तर मिस्रियों को दुष्टों और स्वयं को धर्मियों के साथ सम्बन्धित कर सकें :

- कैन एक नगर निर्माण करनेवाला था

- कैन के नगर का नाम

- कैन के वंशज लेमेक का घमण्ड जो उसने हत्या करने के कार्य में किया।

- बच्चों की मृत्यु

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- अधिक सुरक्षा के लिए लेमेक का दावा

- कैन के वंशजों की सांस्कृतिक विशेषज्ञता

d. शेत की धर्मी वंशावली, उत्पत्ति 5:1-32

यह सम्बद्धता कम से कम चार तथ्यों के ऊपर आधारित थी :

- इस्राएल राष्ट्र शेत के वंशजों में से था।

- शेत के वंशजों की धार्मिकता पर बार-बार ध्यान केन्द्रित करना।

- मूसा द्वारा शेत वंशियों की संख्या के पर जोर दिया जाना

- मूसा ने शेतवंशियों द्वारा लम्बे जीवन का आनन्द लेने पर बल दिया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मूसा ने आदिकालीन इतिहास में आरम्भिक हिंसा और छुटकारे की आशा के बारे में लिखा ताकि वह उसके समकालीन संसार के साथ दृढ़ सम्बद्धता को रेखांकित कर सके।

2. उत्तरोत्तर हिंसा और आशा (42:08)

मूसा ने कहा कि नपीलवंशी पृथ्वी पर आदिकालीन समय "और उसके बाद" से ही रहते आ रहे थे।

मूसा चाहता था कि उसके इस्राएली पाठक उत्पत्ति 6 में दिए हुए इन आदिकालीन नपीलवंशियों को कनान के डरावने नपीलवंशीय योद्धाओं के साथ जोड़ कर देखें।

B. उपयोग (44:42)

उत्पत्ति 6:8 नूह का उल्लेख एक बार फिर से यह संकेत देने के लिए करता है कि परमेश्वर की मंशा उन्हें इन खतरों से छुटकारा देने के लिए भी है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. आधुनिक उपयोग (46:35)

A. उदघाटन (47:34)

मसीह के प्रथम आगमन के समय राज्य का उदघाटन कम से कम दो तरीकों से आदिकालीन इतिहास के संसार में हिंसा का स्मरण दिलाता है :

1. हिंसा (48:02)

नए नियम ने यीशु की क्रूस पर मृत्यु की तुलना हाबिल की मृत्यु की हिंसा के साथ की (इब्रा. 12:23-24)।

2. छुटकारा (50:25)

यीशु संसार के लिए छुटकारे की आशा लेकर आया।

अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के माध्यम से यीशु ने वास्तव में उस छुटकारे को प्राप्त कर लिया जिसकी उसने उदघोषणा की थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. निरन्तरता (53:03)

नया नियम आदिकालीन इतिहास के भाग को राज्य की निरन्तरता पर लागू करता है जो कि यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच का समय है।

1. हिंसा की निरन्तरता (53:54)

यीशु ने यह शिक्षा दी कि उसके अनुयायियों को इस संसार की ओर से घृणा और सताव से दुख उठाना होगा।

यीशु ने कहा कि उसके अनुयायियों के विरूद्ध सताव वैसा ही होगा जैसा धर्मी हाबिल की हत्या के समय हुआ था।

2. विश्वास की निरन्तरता (55:06)

मसीह के अनुयायियों सदैव हाबिल के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए (इब्रा. 11:4)।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. पराकाष्ठा (56:26)

मसीह के पुनः आगमन पर, हम परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध हिंसा के अन्त को देखेंगे। हम अनंतकाल की आशीषों के संसार की ओर एक अन्तिम छुटकारे का अनुभव करेंगे।

1. हिंसा का अन्त (56:52)

नए नियम की पराकाष्ठा अर्थात् शिरो-बिन्दु के चित्र में हिंसा का अन्त केन्द्रीय पहलू है।

2. अन्तिम छुटकारा (57:45)

मसीह जीवन की अनंत आशीषों और उसके लोगों को शान्ति प्रदान करेगा। हमारा छुटकारा पूरा और अन्तिम होगा।

जब मसीह वापस आएगा, तो, और :

- वे सब जिन्होंने उस पर विश्वास किया है, हिंसा के अन्त को देखेंगे।

- वे उद्धार के अनंतकाल के संसार में पूरा और महिमामय छुटकारा पाएंगे।

V. सारांश (59:25)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. किस प्रकार उत्पत्ति 4:1–5:32 की कहानियां और वंशावलियां एक-दूसरे के साथ मेल खाती हैं?

2. उन खतरे की घटनाओं का वर्णन करो जिन्हें मूसा ने उत्पत्ति 6:1-8 में दर्शाया है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. उत्पत्ति 4:1–6:8 की साहित्यिक संरचना मूसा के लेखन के उद्देश्य के विषय में क्या प्रकट करती है?

4. आदिकालीन इतिहास और अपने समकालीन संसार में मूसा ने हिंसा और आशा के बीच कैसे संपर्कों या संबंधों को जोड़ा?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. मूसा अपने अनुसरण करने वाले इस्राएलियों से उनके संसार और आदिकालीन संसार के बीच पाए जाने वाले संबंधों के प्रति किस प्रकार के प्रत्युत्तर को चाहता था?

6. उन दो रूपों को स्पष्ट कीजिए जिनमें राज्य का उदघाटन आदिकालीन इतिहास में हिंसा के संसार का स्मरण कराता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. उन दो रूपों का वर्णन कीजिए जिनमें नया नियम आदिकालीन इतिहास के इस भाग को राज्य की निरंतरता पर लागू करता है।

8. उन दो रूपों का वर्णन कीजिए जिनमें नया नियम आदिकालीन इतिहास के इस भाग को राज्य की पराकाष्ठा पर लागू करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. मूसा ने कैन और हाबिल के जीवनों की तुलना की। कौनसा चरित्र आपके अधिक समान है? क्यों? भिन्न-भिन्न चरित्रों की तुलना करने के द्वारा मूसा क्या हासिल करना चाहता था?

2. उत्पत्ति 6:3 में परमेश्वर ने यह कहते हुए मनुष्यजाति की हिंसा का प्रत्युत्तर दिया कि वह मनुष्यजाति को दण्ड देने से पहले 120 वर्षों का इन्तजार करेगा। यह बात आपको पापी मानवजाति के प्रति परमेश्वर के सहनशील स्वभाव के बारे में क्या बताती है?

3. मनुष्यजाति की भृष्टता और हिंसा के बावजूद हमारे साथ परमेश्वर के संबंध में आशा की एक रेखा देखी जा सकती है। आदिकालीन इतिहास में आशा की कौनसी रेखा है? आज यह आपको कैसे आशा दे सकती है?

4. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार आदिकालीन इतिहास से इस्राएलियों के संसार और वहां से नए नियम के दौरान परमेश्वर के छुटकारे का तरीका एक जैसा रहा है। किस प्रकार आधुनिक संसार में परमेश्वर का छुटकारा इन प्राचीन समयों के समान है?

5. किस प्रकार मसीह का क्रूस पर पाप क्षमा का कार्य उत्पत्ति 4:1–6:8 की हिंसा और आशा में पहले से प्रतिबिम्बित था?

6. राज्य की पराकाष्ठा पर छुटकारे का वर्णन कीजिए। यह बात आपको कैसा अनुभव कराती है कि राज्य की पराकाष्ठा पर हमारा छुटकारा पूर्ण और अंतिम होगा?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org